बुल्ला साहेब का शब्दसार

[जीवन-चरित्र सहित]

प्रकाशक
बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स
इलाहाबाद

१६७७]

[मूल्य १]

बुल्ला साहिब का शब्दसार

[जीवन-चरित्र सहित]

———:०:———

जिसमें उन महात्मा के चुने हुए शब्द
छपे हैं और गूढ़ शब्दों के
अर्थ फुट-नोट में
लिखे हैं।

——:*:——

प्रकाशक
बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद

पाँचवीं बार] अगस्त, १९७९ [मूल्य २)

Printed at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By Sheel Mohan.

जीवन-चरित्र

—* :o: *—

बुल्ला साहिब यारी साहिब के गुरुमुख चेले और जगजीवन साहिब व गुलाल साहिब के गुरू थे। यह जाति के कुनबी थे और असल नाम इनका बुलाकीराम था। इन्होंने भुरकुड़ा गाँव जिला गाजीपुर में अपना सतसंग कायम किया जहाँ इनके बाद गुलाल साहिब और भीखा साहिब भी सतसंग कराते रहे और अब तक वहाँ तीनों की समाधें मौजूद हैं। इनके जीवन का समय विक्रमी सम्बत् १७५० और १८२५ के बीच जान पड़ता है।

जैसा कि गुलाल साहिब के जीवन-चरित्र में लिखा गया है बुल्ला साहिब पहले गुलाल साहिब के नौकर थे और हल चलाने के काम पर तैनात थे। बुल्ला साहिब जब किसी काम को जाते तो भजन ध्यान में लग जाने से अक्सर देर कर देते थे। इनकी सुस्ती की शिकायत लोगों ने गुलाल साहिब से की और गुलाल साहिब कई बार इन पर खफा हुए। एक दिन का जिक्र है कि बुल्ला साहिब हल चलाने को गये थे और वहाँ भगवंत के ध्यान और मानसी साध सेवा म लग गये। उसी समय गुलाल साहिब मौके पर पहुँच गये और बैलों को हल के साथ फिरते और बुल्ला साहिब को खेत की मेंड़ पर आँख बंद किये हुए बैठा देखकर समझे कि वह औंघ रहे हैं और क्रोध में भरकर एक लात मारी। बुल्ला साहिब एकबारगी चौंक उठे और उनके हाथ से दही छलक पड़ा। यह कौतुक देखकर गुलाल साहिब हक्के-बक्के हो गये क्योंकि पहले उन्होंने बुल्ला साहिब के हाथ में दही नहीं देखा था। पर बुल्ला साहिब बड़ी आधीनता से गुलाल साहिब से बोले कि मेरा अपराध छमा करो मैं साधुओं की सेवा में लग गया था और भोजन परोस चुका था केवल दही बाकी था उसे परोस ही रहा था जो आपके हिला देने से हाथ से गिर गया। यह गति अपने नौकर की देख कर गुलाल साहिब चरनों पर गिरे और उनको अपना गुरू धारन किया।

बुल्ला साहिब सुरत शब्द अभ्यासी थे जिनकी ऊँची गति और भारी महिमा उनकी बानी से प्रगट होती है।

नीचे दी हुई बंशावली से उनके गुरु घराने का हाल जान पड़ता है।

बुल्ला साहिब का शब्दसार

गुरु और नाम महिमा

॥ शब्द १ ॥

धन्न धन्न गुरुदेव जो यह गति लाइया।
परम जोति निरंकार ताहि गुन गाइया ॥ १ ॥
मिलि जुरि सखी सहेलरि चउक पुराइया।
अर्ध उर्ध अरु मद्ध तो कलस धराइया ॥ २ ॥
तिरगुन गुन करि तेल काया तन जारिया।
अष्ट जाम बरै जोति कबहुँ न बुझाइया ॥ ३ ॥
ऐसो अद्भुत रंग साध जन रंगिया।
बुल्ला सोभा धाम ताहि अँग अंगिया[1] ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

सुखमनि सुरति डोरि बनाव।
मेटि है सब कर्म जिय के, बहुरि इतहिं न आव ॥ १ ॥
पैठि अंदर देखु कंदर[2], जहाँ जिय को बास।
उलटि प्रान अपान मेटो, सेत सब्द निवास ॥ २ ॥
गंग जमुना मिलि सरस्वति, उमँगि सिखर बहाव।
लवकंति[3] बिजुली दामिनी, अनहद्द गरज सुनाव ॥ ३ ॥
जोति आया आपहीं, गुरु यारि सब्द सुनाव।
तब दास बुल्ला भक्ति ठानो, सदा रामहिं गाव ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साईं के नाम की बलि जावँ।
सुमिरत नाम बहुत सुख पायो, अंत कतहुँ नहिं ठावँ ॥ १ ॥
नाम बिना मन स्वान मँजारी[4], घर घर चित लै जावँ ॥ २ ॥

---

(१) पहिना। (२) गुफा। (३) चमकता है। (४) कुत्ता बिल्ली।

बिन दरसन परसन मन कैसो, ज्यों लूले को गाँव[1] ॥ ३ ॥
पवन मथानी हिरदे ढूँढ़ो, तब पावै मन ठावँ ॥ ४ ॥
जन बुल्ला बोलहि कर जोरे, सतगुरु चरन समावँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

प्रभु निराधार अधार उज्जल, बिन्दु सकल बिराजई ।
अनन्त रूप सरूप तेरो, मो पै बरनि न जावई ॥ १ ॥
बाँधि पवनहिं साधि गगनहिं, गरजि गरजि सुनावई ।
तहँ हंस मुनि जन चूगते मनि, रस परसि परसि अघावई ॥ २ ॥
बिना कर मुख बेनु[2] बाजै, बीन स्रवनन गुंजई ।
बिना नैनन दरस देखो, अगति गतिहिं जनावई ॥ ३ ॥
वा के जाति पाँति न नेम धर्मा, भर्म सकल गँवावई ।
आपु आपु बिचारि देखो, ऐसो है वह रावई[3] ॥ ४ ॥
जीति पाँच पचीस तीनों, चौथे जा ठहरावई ।
तब दास बुल्ला लियो गढ़, जब गुरु दीन्ह लखावई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

निसु दिन गगन निरेखो जाय ।
छोड़ि दे बहु बात बिषया, मगन ह्वै गुन गाय ॥ १ ॥
तिरकुटी जहँ बसत संगम, गंग जमुन बहाय ।
बरत झिलमिलि होत जगमग, तहाँ रहु अरुझाय ॥ २ ॥
सुन्न के मनि भवन में, तहँ ध्यान रहु ठहराय ।
खोजि ले निज बस्तु अपनी, सकल घट रहि छाय ॥ ३ ॥
तीन लोक में गम्म[4] जा के, द्वार सेवा लाय ।
जन बुल्ला कहि अगम मेला, बिरल जन कोइ पाय ॥ ४ ॥

---

(१) जिस तरह लूला अपने पैरों से चल कर गाँव (मुकाम) को नहीं पहुँच सकता इसी तरह बिना नाम के दरस परस के मन की हालत है यानी अंतर में चाल नहीं चलती । (२) एक लम्बा बाजा जो मुँह से बजाया जाता है । (३) राजा । (४) गति ।

॥ शब्द ६ ॥

समुझ मन मानि ले, जोगिया कहल सँदेस ।
रैनि दिवस रबि ससि वहँ नाहीं, तहवाँ कर उपदेस ॥ १ ॥
जटा भभूत बैराग जोग तप, यह तौ जोगिया न भाय ।
सुन्न निरंतर जोगी बोलै, आपा उलटि समाय ॥ २ ॥
आपै जोगी आपै भोगी, आपै सर्ब समान ।
वा जोगिया के दरस परस पर, किया सीस कुरबान ॥ ३ ॥
गगन मँडल अनहद धुनि बाजै, तहँ जोगिया कै फेर ।
कह जन बुल्ला वा जोगी बर, सत्त सब्द कै चेर ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मन तुम सतगुरु चरन समाजी । अविगति गति ब्रह्म बिराजी ॥टेक॥
अचरज दियना बरो अधर में, प्रेम जोति छबि छाजी ॥ १ ॥
धरनि अकास तहाँ नहिं दीखत, अगम पुरुष इक गाजी ॥ २ ॥
आवै न जाइ मरै नहिं जीवै, अनहद धुनि तहँ बाजी ॥ ३ ॥
जन बुल्ला जानो वहि बीर[1], (जो) उलटि पवन घर साजी॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मन बैरागी हो, प्रभु गति लखहि न कोई ॥ टेक ॥
ले कुंभक पूरक घर रखना, रेचक संजम देई ।
त्राटक[2] ताड़ी लगलि केवारी, राम नाम जपि लेई ॥ १ ॥
आगे सुन्न अगम गति लीला, निरखि ध्यान धरि देख ।
जगमग जगमग जोति जगमगै, आपुहिं अलख अलेख ॥ २ ॥
आदि ब्रह्म सदा अबिनासी, बासी अगम अपार ।
आवै न जाय मरै नहिं जीवै, सदा रहै इक तार ॥ ३ ॥
अद्भुत बुंद समूह पुरुष से, तहाँ रह्यो मन छाई ।
जन बुल्ला बलि बलि सतगुरु की, जिन यह पंथ लखाई ॥ ४ ॥

---

(१) बहादुर । (२) तीन गुन जो अटकाने वाले हैं ।

॥ शब्द ९ ॥

मातल मनुवाँ घटहिं समैबों हो ॥ टेक ॥
जौने गैलै संतै गैलैं[1], तौने जइबों हो ।
सहज सरूपै लिहले, हरि गुन गइबों हो ॥ १ ॥
तीरथ तिरबेनी नहइबों, गगन में जइबों हो ।
अनहद धुनि सुनि, दीपक बरइबों हो ॥ २ ॥
बारि दीया देखो होया, सुन[2] उँजियारो हो ।
थारी सतगुरु पूरो, निज भेदहिं सारो हो ॥ ३ ॥
देखि दरस मन तनहिं, छाड़ि दीया हो ।
जन बुल्ला बानी बोलै, मरि फिरि जीया हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

अनहद ताल दृग थेइ थेइ बाजै, सकल भुवन जा की जोति बिराजै॥१॥
ब्रह्मा बिस्नु खड़े सिव द्वारे, परम जोति सो करहिं जुहारे[3] ॥२॥
गगन मँडल महँ निर्तन होय, सतगुरु मिलै तो देखै सोय ॥३॥
आठ पहर जन बुल्ला गाजै, भक्ति भाव माथे पर छाजै ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

जियरा तू जीवन जनम सुधारो, तातें भवसागर से तारो ॥टेक॥
परखि परखि तिरबेनी संगम, झिलमिलि जोति सितारो[4] ॥१॥
उनमुनि लागो बंद सहज धुनि, जगमग जोति पसारो ॥२॥
जन बुल्ला सदा हुसियारो, सतगुरु सब्द बिचारो ॥३॥
निर्गुन नाम निरंतर पेखी, जीतो मन भय मारो ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

गुरु नाम मिलो सच पाया है ।
बिसरी देह गेह सुख संपति, जोतिहिं जोति समाया है ॥ १ ॥
जोतो नगर नवो दर मूँदो, ब्रह्म अगिन तन लाया है ।
दसवें द्वार के ताला खोलो, गगन मँडल मठ छाया है ॥ २ ॥

(१) जिस मार्ग से संत गये। (२) सुन्न। (३) बंदगी। (४) तारा।

जहँ नहिं अवन गवन कै चिंता, अनँद भयो घर आया है ।
संत साध मिलि खेलन लागे, दरसन को फल पाया है ॥ ३ ॥
सतगुरु मो को अलख लखाया, आदि अंत इक साया[1] है ।
जन बुल्ला याही बिधि खेलो, तब अवधूत कहाया है ॥ ४ ॥

चेतावनी

॥ शब्द १ ॥

बटोही खोजहु क्यों नहिं आप । सुमिरहु अजपा जाप ॥टेक॥
बिन खोजे कहुँ राह न पैहौ, कोटिन करहु बिलाप ॥ १ ॥
निकटहिं राम नाम अभि अंतर, जानहिं जाहि मिलाप ॥ २ ॥
हाजिर हजूर त्रिबेनी संगम, झिलिमिलि नूर जो जाप ॥ ३ ॥
जन बुल्ला महबूब नूर में, यारी पीर[2] प्रताप ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

धन कुलवंती जिन जानल अपना नाह[3] ॥ टेक ॥
जेकरे हेतू[4] ये जग छोड़्यो, सो दहुँ कैसन बाट[5] ।
रैन दिवस लव लाइ रहो है, हृदय निहारत बाट ॥ १ ॥
साध संगति मिलि बेड़ा बाँधल, भवजल उतरब पार ।
अबकी गवने बहुरि नहिं अवने, परखि परखि टकसार ॥ २ ॥
यारीदास परम गुरु मेरे, बेड़ा दिहल लखाय ।
जन बुल्ला चरनन बलिहारी, आनँद मंगल गाय ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३ ॥

उतहीं रहौ इतै जनि आव । निरगुन स्वामी से मन लाव ॥१॥
जनम मरन कै संस मिटाव । इत उत मन कहुँ नाहिं चलाव ॥२॥
जो जन गगन मँडल घर छाव । ता का आवागवन नसाव ॥३॥
यारी सतगुरु दिया लखाव । बुल्ला निरखि परम पद पाव ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

हो नर हरिहिं हिये नहिं जाना । तौ का समुझि परै ब्रह्म ज्ञाना ॥टेक॥

(१) एक सा । (२) गुरु । (३) पति । (४) जिसके वास्ते । (५) वह न जानें कैसा है ।

करहि सिद्धि आसा गँठियाये, ता पर करत गुमाना ॥ १ ॥
आतम राम न नीके जानै, चौरासी लपटाना ॥ २ ॥
दूध पियाय रिझाय राखि मन, भाखहि बेद पुराना ॥ ३ ॥
कहत फिरै हम सब से ऊपर, भूलो फिरत दिवाना ॥ ४ ॥
बीज एक अंकुर है एकै, फल फुल रहत समाना ॥ ५ ॥
उपजत बिनसत होत हैं केते, अंत केहू नहिं आना ॥ ६ ॥
नाम प्रताप की महिमा सुनिये, तीन लोक धरि ध्याना ॥ ७ ॥
जन बुल्ला रामहिं को सेवक, बोलहिं सब्द निधाना ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५ ॥

दया बिनु छार सकल माया, कबहीं राम नाम नहिं आया ॥टेक॥
पोखरा खनावहिं[1] बाग लगावहिं, पावहिं मन माया ॥ १ ॥
आतम राम न नीके जानहिं, ज्यों आया त्यों जाया[2] ॥ २ ॥
समुझि न परहि साध को मारग, जिन हरि नामहिं गाया ॥ ३ ॥
जन बुल्ला रामहिं को सेवक, मिथ्या जानहि माया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

जीवन जनम सुधारन देह।
देह छोड़ि बिदेह होना, अचल पद यहि लेह ॥ १ ॥
काको माता पिता काको, काको सुत बित देह।
जीवतही का नात इनका, मुए काको केह ॥ २ ॥
देह धरि के राम कृस्नहुँ, जगत आनि बड़ेह।
पारब्रह्म को सुमिरन करिकै, जोतिहिं जोति मिलेह ॥ ३ ॥
जानि कै अनजान होइये, पूजिये ब्रह्म नेह।
दास बुल्ला बानि बोले, काल के मुख खेह[3] ॥ ४ ॥

प्रेम

॥ शब्द १ ॥

साची भक्ति गुपाल की, मेरो मन माना।
मनसा बाचा कर्मना, सुनु संत सुजाना ॥ १ ॥

---

(१) तालाब खोदाते हैं। (२) चला गया। (३) धूल।

लँगरा लुंजा ह्वै रहो, बहिरा अरु काना[1] ।
राम नाम से खेल है, दीजै तन दाना ॥ २ ॥
भक्ति हेतु गृह छोड़िये, तजि गर्ब गुमाना ।
जन बुल्ला पायो बाक[2] है, सुमिरो भगवाना ॥ ३ ॥

॥ शब्द २ ॥

लगन चकोर मानो चंद ।
निरखि दहुँ दिसि हेरि आनो, होत जीव अनंद ॥ १ ॥
जस उदित उज्जल सीप बरसै, नैन हूँ झरि लाय ।
होत अगम अगाध सोभा, मो पै बरनि न जाय ॥ २ ॥
जग आस बास निरास कीन्ही, लीन्ही प्रेम निचोय ।
पियत रुचि रुचि दास बुल्ला, नाम निर्मल जोय ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३ ॥

या बिधि करहु आपुहिं पार ।
जस मीन जल की प्रीत जानै, देखु आपु बिचार ॥ १ ॥
जस सीप रहत समुद्र माहीं, गहत नाहिन बार[3] ।
वा की सुरत आकास लागी, स्वाँति बुंद अधार ॥ २ ॥
(जस) चकोर चन्द से दृष्टि लावै, अहार करत अँगार ।
दहत नाहिन पान कीन्हे, अधिक होत उजार[4] ॥ ३ ॥
कीट भृङ्ग की रहनि जानो, जाति पाँति गँवाय ।
बरन अबरन एक मिलि भे, निरंकार समाय ॥ ४ ॥
(अस) दास बुल्ला आस निरखहि, राम चरन अपार ।
देहु दरसन मुक्ति परसन, आवा गवन निवार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

जोग की गति सुनत हिये में, गगन धाम गई ॥ १ ॥
पुलकि पुलकि हम लियो पतिबार[5], सत्त सब्द मई ॥ २ ॥

---

(१) मन की वहिरमुख धावना बन्द करो तब मालिक की ओर अंतर में चाल चलेगो । (२) बचन । (३) पानी । (४) चकोर आग खाने से नहीं जलता बल्कि उसकी चेतन्यता बढ़ती है । (५) श्रेष्ठ पति ।

जोग करि तुम भोग रस तजि, गंग जमुन थई[1] ॥ ३ ॥
होत अनहद बानि त्रिकुटी, दरस आपु दई ॥ ४ ॥
प्रेम करु तुम नेम हिय में, सुरत डोरि धुनी ॥ ५ ॥
दास बुल्ला बानि बोलहि, आनि तिरबेनी[2] ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

हौं अबला बनि आई, देहु दरस गति पाई ॥ टेक ॥
सुभ घरी सुभ दिन सुभ पल छिन, जब तुमहीं लौ लाई ॥१॥
मनसा बाचा कर्मना, मेरे धन राम गुसाईं ॥२॥
केतिक जन्म चूक प्रभु मेरो, कहँ लग बिनय सुनाईं ॥३॥
जन बुल्ला सरनागति आयो, सुमिरि सुमिरि गुन गाईं ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

संतो जोग जानै तौन ।
आपु आपु बिचारि लेवै, रहै घट में मौन ॥ १ ॥
चाँद सूर एकग्र करिके, सुखमना धरि पौन ।
तहँ होत है अनहद गहागह, मिटो मन को धौन[3] ॥२॥
लाल पहिरि सपेद पहिरै, जरद हरिया[4] जौन ।
स्याम पहिरि के बनो दूलह, मिट्यो आवागौन ॥ ३ ॥
पहिरि के जब उलटि चलि भा, भयो घर में चैन ।
तब दास बुल्ला बानि बोलै, निर्त ताथेइ ग्रैन ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

अब कि बार मो पै होहु दयाल । रोम रोम जन होइ निहाल ॥१॥
जन बिनवै आठौ पहवार[5] । तुम्हरे चरन पर आपा वार ॥२॥
तुम तो राम हहु निर्गुन सार । मोरे हिय महँ तुम आधार ॥३॥
तुम बिन जीवन कौने काज । बार बार मो को आवै लाज ॥४॥
सतगुरु चरनन साज समाज । बुल्ला माँगै भक्ती राज ॥५॥

---

(१) दहिनी और बाईं स्वासा को ठहराओ । (२) सुन्न । (३) धावना, चंचलता ।
(४) हरा । (५) पहर ।

॥ शब्द ८ ॥

लगन धुनि लागी सो पागी, परम गति जागी ।१॥
अस लागी जस चन्द्र चकोरहिं, चुगत निगुन[1] गति आगी ॥२॥
जन बुल्ला जेहिं सहजहिं लागी, सो गुरु सब्द अनुरागी ॥३॥

॥ शब्द ९ ॥

मोर मनुवाँ मनावै धावै पिया नहिं आवै हो ॥ टेक ॥
सासु मोरी दारुनी[2] ससुर मोर भोला हो ॥ १ ।
ननद बैरिन भैली काढ़ि दइ डोला हो ॥ २ ॥
सेंदुरा बाँधल पिय हिय की पाटे[3] हो ॥ ३ ॥
बुल्ला डर मानै पिया की झपाटे[4] हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

देखो पिया काली घटा मो पै भारी ॥ १ ॥
सूनी सेज भयावन लागी, मरौं बिरह की जारी ॥ २ ॥
प्रेम प्रीति यहि रीति चरन लगु, पल छिन नाहिं बिसारी ॥ ३ ॥
चितवत पंथ अंत नहिं पायो, जन बुल्ला बलिहारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

अस धुनि में रहु मेरे मनुवाँ ॥ टेक ॥
निरखि त्रिबेनी छोड़ि दे तनुवाँ । अष्ट कँवल दल उलटि फुलनुवाँ ॥१॥
गगन गुफा हँस कियो है पयनुवाँ[5] । अनहद बाजा बाज बजनुवाँ ।२॥
थकित भयो सुनि आयो गवनुवाँ । बैठि सभा साधु संत जननुवाँ ।३।
अविगत लीला अलख लखनुवाँ । बुल्ला बलिहारी सतगुरु की,
जिन अस नाच नचनुवाँ ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

रँग लागो गोरिया आजु रँग लागो, आपा सोधि भ्रम भागो ॥टेक॥
तिरगुन गुन गुनहीं पर जोरा, निर्गुन नाम हिये पागो ॥१॥
झिलमिलि झिलमिलि तिरबेनी संगम, अविगत गति ब्रह्म जागो।२।

(१) निर्गुन । (२) कट्टर । (३) पाटी, माँग । (४) जल्दी । (५) चलना ।

सुर नर मुनि जाको अंत न पावहिं, सो मोरे नैनन आगो ॥३॥
हरि रँग जुगन जुगन उँजियारो, जन बुल्ला साधुन साँगो[1] ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

भसत[2] काहे न जोगिया, यह मरै बिरह दुख रोगिया ॥ १ ॥
बिनु जोगी समुझै कल न परतु है, क्यों जी वै जन रोगिया ।
पोर घनेरी सूल उठत है, यह दुख जानै रोगिया ॥ २ ॥
आवै जोगी करै तबीबी[3], तब सुख पावै रोगिया ।
मथि मन पवन जे दारु[4] लगाई, जन बुल्ला दुख भगिया ॥ ३ ॥

॥ शब्द १४ ॥

न्हान को गंग जमुन तट जैबों ।
तन मन धन न्यौछावर वारों, जगमग जोति जगैबों ॥ १ ॥
पवना उलटि भजन नित करिबों, सुखमन सेज बिछैबों ।
प्रेम बिलास आस साधुन में, निर्गुन रूप कहैबों ॥ २ ॥
पाप पुन्न दुख सुखहिं बहैबों, अमृत नाम पियैबों ।
होत अनन्द बिनोद ब्रह्म को, बहुरि न या कलि ऐबों ॥ ३ ॥
दया धरम मेरे नाम खजाना, ज्ञान रतन भरि लैबों ।
अद्भुत रूप कहाँ लग बरनों, अनहद में हद कैबों ॥ ४ ॥
सुरति सुहागिन चरन मनावहि, खसम आपनो पैबों ।
जन बुल्ला है प्यारी खसम की, रहसि रहसि गुन गैबों ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

हे मन करु गोबिंद से प्रीत ।
बीच मैदान में देइयो, चौहट नगारा जीत ॥टेक॥
स्रवन सुनि ले नाद प्रभु की, नैन दरसन पेख ।
अचल अमर अलेख प्रभुजी, देखही कोउ भेष ॥ १ ॥
भाव सँग तू भक्ति करि ले, प्रेम से लवलीन ।
सुरति से तू बेर[5] बाँधो, मुलुक तीनो छीन ॥ २ ॥

---

(१) संग । (२) दरसना । (३) इलाज । (४) दवा । (५) बेड़ा ।

अधम अधीन अजाति बुल्ला, नाम से लवलीन ।
अर्थ धर्म अरु काम मोछहिं, आपने पद दीन ॥ ३ ॥

ब्रह्मज्ञान

॥ शब्द १ ॥

जिन जिन जन्म लखो[1], तिन को दरस भयो ।
आनँद मगन रहत निस बासर, दुबिधा धोख जँजाल गयो ॥ १ ॥
जन्म पदारथ यहि जो स्वारथ, पाँच तत्त गुन तीनी ।
उलटि निरंतर निरखि बिचारो, परम तत्त निज चीन्ही ॥ २ ॥
बार बार के अवन गवन में, कर्म भर्म की धार ।
खोजत खोजत सतगुरु पाये, उतरि परो भवपार ॥ ३ ॥
बैठो जाइ के संत सभा में, जहाँ अमरपुर लोग ।
आवागवन कबहिं नहिं होई, इहै हमारो जोग ॥ ४ ॥
जन बुल्ला ब्रह्मज्ञान बोलतु है, सकल बेद को मूल ।
बूझन वाले बूझि लहिंगे, जिन्ह देखी सब खूल[2] ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

हौं बौरहा दिवाना तातें बोलत हौं ब्रह्मज्ञाना ॥ टेक ॥
संतन जहाँ जहाँ मन माना, दूजा दूरि लुकाना ॥ १ ॥
परम जोति से ध्यान लगो है, आवा गवन नसाना ॥ २ ॥
उलटि सर्प जब माँद[3] समाना, बिधि परपंच मिटाना ॥ ३ ॥
जन बुल्ला दाया सतगुरु की, ऐसा अमल कमाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

संतो अमल हमारे नाम की ॥ १ ॥
आठ पहर मन छकै रहतु है, परम तत्त निरकार[4] की ॥२॥
रहत अधार सत्त सुकिरति कै, मेटै भरम बिकार की ॥३॥

---

(१) जिस जिस ने जन्म लखा यानी बारम्बार जनम मरन की पीड़ा को बिचारा । (२) जानकार (अभ्यासी) कि जिन्होंने अभ्यास की आँखों से सब भेद खुला देखा है वही जान लेंगे । (३) बाँबी । (४) निरंकार ।

सहजहिं चढ़ो अकास आस लै, लहरि उठत ब्रह्मज्ञान की ॥४॥
सुमिरत चरन कमल धरनी धर, उज्जल बिमल बिकार की ॥५॥
जन बुल्ला यहि पदहिं समाने, फिरी दुहाई नाम की ॥६॥

॥ शब्द ४ ॥

उलटै पवन मवन[1] ह्वै रहई। धरै ध्यान निर्गुन तत गहई ॥१॥
झलक झलक निर्गुन कै जोती। कोटिक भानु उदै छबि होती॥२॥
बाजत अनहद गगन अघोरा। मगन भयो तहवाँ मन मोरा ॥३॥
जन बुल्ला कहँ इहै अधारा। राम राम कहि करहि पुकारा ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

ऐसी बिनय सुनहु अबिनासी। अब कि बार काटहु जम फाँसी॥१॥
भया प्रकास मिटा अँधियारा। आदि अंत मध भो उँजियारा ॥२॥
रूप रेख तहँ बरनि न जासी। निरंकार आपुहिं अबिनासी ॥३॥
जन बुल्ला तहँ रहै हजूरा। पूरन ब्रह्म देखा जहँ नूरा ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

एकै ब्रह्म सकल माँ अहई। काम क्रोध से भरमत रहई ॥१॥
काम क्रोध है जम की फाँसी। मरि मरि जिव भरमै चौरासी ॥२॥
लछ चौरासी भरम गँवाया। मानुष जनम बहुरि कै पाया ॥३॥
मानुष जनम दुर्लभ रे भाई। कह बुल्ला याही जग आई ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

लागिलो चरनन से, दीदार मनुवाँ यों लहै ॥ टेक ॥
कुहुकि कुहुकि कुहुकि रह मनुवाँ, पुलकि पुलकि धरु ध्यान ॥१॥
रज तम छोड़ि सत्त घर रहना, कहना है ब्रह्मज्ञान ॥२॥
जन बुल्ला याही बिधि लहना, निर्गन नाम निधान ॥३॥

॥ शब्द ८ ॥

ऐसा अद्भुत तन मैं जाना, जहँ दस द्वार बनो अस्थाना ॥१॥
पाँच लोग तहँ बसैं प्रधाना, मन राजा तहँ बड़इ सयाना ॥२॥

---

(१) चुप।

तीनिउ जना त्रिबेनी आना, गंग जमुन कीन्हो अस्नाना ॥३॥
परम तत्त पर लागो ध्याना, जन बुल्ला बोलहि ब्रह्मज्ञाना ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

अहो मन ज्ञानी, तूँ तौ परम प्रीति पहिचानी ॥ टेक ॥
उदय अस्त जा कि महिमा बोलै, सब घट अमृत बानी ॥१॥
सुरति डोरि लव लागि रहानी, राम नाम निजु जानी ॥२॥
रबि ससि पवन बिलोकै मनुवाँ, गगन मगन मन मानी ॥३॥
अगम अपार सिंधु सागर प्रभु, कह बुल्ला जिन जानी ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

महबूब दिवाना पियत पियाला, निर्गुन खाना ॥ १ ॥
निर्गुन खाना त्रिकुटी जाना, साध संगति पहिचाना ॥ २ ॥
निरगुन खाना हरदम जाना, अष्ट जाम मस्ताना ॥ ३ ॥
निरगुन रूप बोलहि जन बुल्ला, पाया गगन रकाना[1] ॥ ४ ॥

॥ भेद ॥

॥ शब्द १ ॥

सतगुरु मुक्ति बतावल, पावल जिव कर मूल।
सुमिरि सुमिरि सुख बिलसहि[2], सूच्छम गुन अस्थूल ॥ १ ॥
ऐसन अद्भुत है सो, जुग जुग अचल अपार।
आवै जाय न उपजै बिनसै, सदा रहै इकतार ॥ २ ॥
मन माने की कहिये, तौ लहिये औतार।
अपने अपने रँग में, रँगा सकल संसार ॥ ३ ॥
मनसा बाचा कर्मना, दूजा नहिं भाव।
जन बुल्ला गुन गावही, आनँद मँगल बधाव ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

बूझहु पंडित अचरज एक। सेत बरन तहँ सदा अलेख ॥१॥
साधि पवन षट चक्र छुड़ावो। तिरबेनी के घाटै आवो ॥२॥

(१) तोशा, सामान। (२) बिलास करता है।

उनमुनि मुद्रा लगी समाधी । रबि ससि पवनहिं राखो बाँधी ॥३॥
चाचरि मुद्रा से प्रीति लगावो । भूचरि मुद्रा से प्रेम बढ़ावो ॥४॥
अगोचरि मुद्रा से आन भुगावो । खेचरि मुद्रा से दरस दिखावो॥५॥
जो पंडित तैं करु पंडिताई । चरन रेनु हिरदे लै लाई ॥६॥
चरन रेनु का करहु जनेवा । तौ तू पंडित पावहु भेवा ॥७॥
जो यह अचरज देइ बुझाई । सोई सतगुरु अगम कहाई ॥८॥
अगम जोति का धारै ध्यान । बुल्ला बोलहि सब्द निदान ॥९॥

॥ शब्द ३ ॥

राम राय लावल फुलवारी ॥ टेक ॥
मूल सींचि के बाग लगाया । कलियाँ भईं तबहिं चुनवाया ॥१॥
एक फूल ते अनेक कहाय । फूल झरी झरि रहि कुम्हिलाय ॥२॥
काहू फूल क मरम न पाया । सरगुन मद्धे रहल समाया ॥३॥
जन बुल्ला सतगुरु बलिहारी । सेत फूल जिन लिहल बिचारी॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

मोर सुमति भइल, मन जतन बिसारी रे ॥ टेक ॥
मूरहिं बाँधी सूरहिं[1] साधी, पछिम बिचारी रे ॥ १ ॥
लोभ मोह अरु माया छाया, भरमन सब टारी रे ॥ २ ॥
छूटी माया तन पाया छाया, ब्रह्म की जोती रे ॥ ३ ॥
जन बुल्ला जोगी बोलहि, निझर झरै जहँ मोती रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

आनँद उदित अखंडित सोहं, मानो गगनद्वार गति जोहं ॥१॥
सिद्धी मूलि मूल मति पावन, जामन पवनहिं उलटि जमावन॥२॥
अर्ध उर्ध के मद्ध निरंतर, जगमग जगमग जोति जगावन ॥३॥
देखि दिखावै कहावै अकेला, मेला अलख पुरुष सँग खेला ॥४॥
जन बुल्ला याही बिधि खेला, अनहद डंक निसंक को देला ॥५॥

(१) स्वर ।

॥ शब्द ६ ॥

आली आजु कि रैन प्रीति मन भावै ॥ १ ॥
गाय बजावत हँसत हँसावत, सब रस लेय मनावै ॥२॥
जन बुल्ला हरि चरन मनावै, निरखि सुरति गति आपु में पावै ॥३॥

॥ शब्द ७ ॥

नैना मोरे निपट बिकट ठौर अटके ॥ १ ॥
सुख को साथ सबै कोइ चाहै, दुखहिं परे पर छटके ॥ २ ॥
भौंह कमान नैन दोउ गाँसी, जहाँ लगै तहँ लटके ॥ ३ ॥
जन बुल्ला दाया सतगुरु की, देखु सकल जग भटके ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

पूरब देस कर आपुहिं बँभना, आपु भयल अबधूता ॥ टेक ॥
अपरम्पार पारब्रह्म बँभना, आयो हमरे घर अँगना ।
परम तत्त ले पूजि आपु हीं, सरल[1] गावै अनहद ततना[2] ॥१॥
रजगुन तमगुन सतगुन सारल, हारल तन मन दोऊ ।
गगन मँडल में हरि रस चाखल, बूझै बिरला कोऊ ॥२॥
ज्ञान कि तरकस सब्द तीर भरि, प्रेम धनुष धरि तानल ।
सुरति कै सीस निसाना मारल, भव का भंडा फोरल ॥३॥
निर्भय जन इक निर्गुन गावल, स्वासा सगुन भावल ।
जन बुल्ला बिन स्वासहि गावहि, सेत प्रकास समावल ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

चरन लागो इत तें हारो ॥ टेक ॥
ममता मान जान तन वारो । ब्रह्मा बिस्नु समाधी धारो ॥१॥
तिरबेनी तिर घाट सँवारो । जगमग जगमग मनि उँजियारो ॥२॥
भाग बड़ो जिन यह गति सारो । पवन पियाय नागिनी मारो ॥३॥
बिष उतरो तब भो उजियारो । बुल्ला रहै सदा हुसियारो ॥४॥

---

(१) साधारन ही । (२) तान ।

॥ शब्द १० ॥

बुल्ला कवने द्वारा देखै आपु ॥टेक॥

कवने द्वारा आवै जाय। कवने द्वारा रहै समाय ॥ १ ॥
तिरबेनी द्वारे देखै आपु। सुखमन द्वारे सुमिरै जापु ॥ २ ॥
इँगला पिंगला आवै जाय। दसव द्वारा रहै समाय ॥ ३ ॥

आरती

॥ शब्द १ ॥

ऐसी आरति मेरे मन भावै। रबि ससि पवन भवन मन लावै ॥१॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस लै आवै, एक मते ह्वै अरथ दिखावै ॥२॥
गंगा जमुना अरघ दिवावै, अस्तुति से जा प्रभुहिं मनावै ॥३॥
सुरति निरति लै घंट बजावै, जगमग जोति परम पद पावै ॥४॥
जन बुल्ला जो सरन बसि आवै, रंग महल बिच नाम जगावै ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

पूजों निरकार बहु भाँती। चेकरे पुजत सितल[1] मोरी छाती ॥१॥
जाके न चंद सूर दिन राती। नेम अरु धर्म न दीपक बाती ॥२॥
जेकरे न ब्रह्म सीव सनकादी। निरंकार इक अधिक सुहादी[2] ॥३॥
जेकरे मोह बरन नहिं जाती। सहज सरूपी पुलकि अघाती ॥४॥
जन बुल्ला के इहै सँघाती। मन पवना मिलि करों आरती ॥५॥

हिंडोला

(१)

हिंडोला झूलहि आतम नारी ॥टेक॥

काम क्रोध जे कर्म पटरी, मन पवन डोरी लाय ॥ १ ॥
तहँ चाँद सूरज खंभ गड़िया, गंग जमुन बँधाय ॥ २ ॥
पौढ़िया ब्रह्मंड चढ़िके, गगन गरजि सुनाय ॥ ३ ॥
जगमगति जोति प्रकास उज्जल, दरस की बलि जाय ॥ ४ ॥
झूलहिं जो हंस कलोल करि के, सखिन को सँग लाय ॥ ५ ॥

---

(१) ठंडी हुई। (२) सोभायमान।

तहँ मिलै बिरही हंस जन कोउ, अगम दियो है लखाय ॥ ६ ॥
तहँ दास बुल्ला कियो संगति, रह्यो चरन समाय ॥ ७ ॥

(२)

सतगुरु नावल अधर हिंडोलना ।
हम धन झुलब सुघर हिंडोलना ॥ १ ॥
झुलत झुलत गइलुँ गगनहिं तटना ।
तहवाँ साधन को अखरना[1] ॥ २ ॥
सेत सुहावन जगमग देखलना ।
तहवाँ प्रान हमार समैलना[2] ॥ ३ ॥
अब कि समैले फिर न अइबना[3] ।
जन बुल्ला गावल निगुन हिंडोलना ॥ ४ ॥

बसंत और होली

(१)

मन बसंत खेले अगम फाग, चरन कमल अनुराग जाग ॥१॥
खेले ब्रह्मा औ महादेव, खेले नारद औ जैदेव ॥२॥
खेले ध्रुव प्रहलाद जानि, खेले सुकदेव भक्ति मानि ॥३॥
हनुमत खेले सेवक होय, अरजुन खेले गति बिलोय[4] ॥४॥
सहदेव खेले अगम गाय, परम जोति में रहे समाय ॥५॥
खेले नाभा औ कबीर, खेले नानक बड़े धीर ॥६॥
दसम द्वार पर दरस होय, जन बुल्ला देखे आपु सोय ॥७॥

(२)

हरि हम देख्यो नैनन बीच, तहाँ बसंत धमारि कीच ॥१॥
आदि अंत मधि बन्यो बनाय, निरगुन सरगुन दोनों भाय[5] ॥२॥
चीन्हेव तिन्हको लियो लगाय, अनबूझो रहि गो मुँह बाय ॥३॥
सुन्न भवन मन रह्यो समाय, तहँ ऊठत लहरि अनंत आय ॥४॥
जगमग जगमग ह्वै अँजोर, जन बुल्ला है सेवक तोर ॥५॥

---

(१) अखाड़ा । (२) समाया । (३) आना । (४) मथ कर । (५) भाव ।

(३)

होरी खेलो सतगुरु दयाल से ।
धन जोबन सुपना करि जानो, मेलो जोति अपार से ॥१॥
होत अगाध अकास सब्द धुनि, सुनत रहो सुख चाह से ।
साहिब सुरति मुरति हिय लागी, केल करत हर हाल से ॥२॥
एक तान इक मान मनावै, एक ज्ञान इक ध्यान से ।
एक दसा इक भाव भक्ति लै, मिलो बुंद दरियाव से ॥३॥
अलख लखायो दरस दिखायो, खेलत फाग सुचाल से ।
जन बुल्ला ऐसी होरी खेले, उतरि गये भव जाल से ॥४॥

(४)

होरी खेलो रंग भरी, सब सखियन संग लगाई ॥ टेक ॥
फागुन आयो मास अनँद भो, खेलि लेहु नर नारी ॥ १ ॥
ऐसा समय बहुरि नहिं पैहो, जैहो जन्म जुवा हारी ॥ २ ॥
तीर त्रिबेनी होरी खेलो, अनहद डंक बजाई ॥ ३ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस तिनों जन, रहे चरन लिपटाई ॥ ४ ॥
बनि बनि आवें दरस दिखावें, अद्भुत कला बनाई ॥ ५ ॥
जन बुल्ला ऐसि होरी खेले, रहे नाम लौ लाई ॥ ६ ॥

(५)

निर्गुन बसंत को सुनहु भाव । दूजा अवरि न मोहिं चाव । १॥
हुलसी मनसा फलसी डाल । वा की साखा सर्ग पताल ॥२॥
बिना मूल अस्थूल आहि । वाकी पटतर लाउँ काहि[1] ॥३॥
ज्ञान ध्यान बसि भयो मोर । तन से भागे सबहि चोर ॥४॥
दसौं दिसा में भयो सोर । बुल्ला सेवक प्रभू तोर ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

हौं खेलत फाग सुहावन, हरि आये मन भावन ॥१॥
जब तें कृपा कियो आ जन पर, मोच्छ मुक्ति फल पावन ॥२॥

(1) किस को ।

बाजत ताल मृदंग डफ्फ सुर, सरस[1] राग सुर गावन ॥ ३ ॥
देत दान तन मन न्योछावरि, भाँवरि संत सुभावन ॥ ४ ॥
जन बुल्ला ऐसी होरी खेलो, अद्भुत कला समावन ॥ ५ ॥

झूलना

(१)

जहँ आदि न अंत न मद्ध है रे, जहँ अलख निरंजन है भेला ॥१॥
जहँ बेद कितेब न भेद है रे, नहिं हिन्दू तुरुक न गुरु चेला ॥२॥
जहँ जीवन मरन न हानि है रे, अगम अपार में जाय खेला ॥३॥
बुल्ला दास अतीत यों बोलई, यारी सतगुरु सत सब्द देला ॥४॥

(२)

प्रेम हिंडोलना झूलना रे, जहँ अलख धनी की मौज घनी ॥१॥
तहँ वार पार दरियाव नहीं, नाहीं आवन नाहीं जानी ॥२॥
अचल अमर घर बैठि के रे, मगन भयो नहिं ख्याल अपनी । ३॥
बुल्ला दास अतीत यों बोलै, उलटि कँवल गगन आनी ॥४॥

रेखता

(१)

प्रीति की रीति से जीति मैदाँ लिया,
पवन के घोश[2] से जोर जाय किया है ॥ १ ॥
पाँच अरु तीन पच्चीस को बसि किया,
साहिब को ध्यान धरि ज्ञान रस पिया है ॥ २ ॥
तहँ भूख औ प्यास नहिं आस औ बास नहिं,
एक साहिब से ब्रह्म जाय थिया[3] है ॥ ३ ॥
दास बुल्ला कहै अगम गति तौ लहै,
तोरि के कुफुर तब गगन गढ़ लिया है ॥ ४ ॥

---

(१) रसीला। (२) घोड़ा। (३) स्थिर हुआ।

(२)

गगन के मँडल मगन मन में हुआ,
अर्ध से उर्ध भरि परी बेरी ॥ १ ॥
सेत परकास आकास में फूलि रहि,
बसत है प्रान सुख चैन हेरी ॥ २ ॥
तहँ काया माया नहीं मरन जीवन नहीं,
एक साहिब की भई चेरी ॥ ३ ॥
दास बुल्ला कहै अगम गति तौ लहै,
धन्न सतगुरू महिमा तेरी ॥ ४ ॥

(३)

जिन को हरि नाम् से नेह लगो,
तिन को अब ग्रेह की काहे की आसा ॥ १ ॥
परतीत बनी निज साधुन से,
जिन गगन गुफा में दियो बासा ॥ २ ॥
जगमग जोति अपार बिराजत,
जम जालिम की कटी फाँसा ॥ ३ ॥
बुल्ला हिरदय बिचारि बोलै,
बँद छोड़ निरंजन देखु तमासा ॥ ४ ॥

(४)

देह पबित्र से नेह करो,
जहँ राम बसत आतम-धारी ॥ १ ॥
मूल में गाँठि परो दृढ़ से,
जहँ सुखमन सेज कि राह सँवारी ॥ २ ॥
दसो द्वार पर जोति बरै,
उतै निरंकार है ब्रह्म अपारी ॥ ३ ॥
बुल्ला हिरदय बिचारि बोलै,
गुर ज्ञान कि बात सुनो हमारी ॥ ४ ॥

(५)

गाजत है छबि छाजत है,
उतै नाम निरंजन की गति हेरी ॥ १ ॥
राह लियो परमारथ की,
तब स्वारथ संजम सत्त की चेरी ॥ २ ॥
बानी बोल बिलास कि आनी,
मरन जिवन नहिं भव में फेरी ॥ ३ ॥
बुल्ला हिरदय बिचारि बोलै,
ऐसो ध्यान निरंतर राम से मेरी ॥ ४ ॥

(६)

बलि हौं बलि हौं सतगुरु की,
जिन ध्यान दियो परमेसुर को,
त्रिकुटी संगम निज राह निबेरी ॥ १ ॥
प्रेम बिलास अकास में बास है,
आवागवन रहित भौ फेरी ॥ २ ॥
अनहद बाजे झनकार कि बानी,
बिन सरवन तहँ सुनत है टेरी ॥ ३ ॥
बुल्ला हिरदय बिचारि बोलै,
ब्रह्मज्ञान कि बात सुनो मेरी ॥ ४ ॥

(७)

जो पै कोउ ध्यान में सदा रहै,
लहै ब्रह्मज्ञान तब साध जाय कहा है ॥१॥
मूल को साधि के पवन को बाँधि के,
त्रिकुटी में आइ के गगन द्वार जोहा है ॥२॥
जोती से जोती मिलो पवन में पानी मिलो,
धरती में अकास मिलो अनहद जाय गहा है ॥३॥

दास बुल्ला कहै अगम गति तब लहै,
गुरु के बचन से अचल घर लहा है ॥ ४ ॥

(८)

जिन से अब जोग जुगति बनि आयो,
अरध उरध तिरबेनी न्हाई ॥ १ ॥
सब पाप जु दोष बहाय दियो,
हरि नाम निरंजन परी दुहाई ॥ २ ॥
दूसरो न अवर है यहि कलि में,
जिन तिहुँ लोक रचि रच्यो बनाई ॥ ३ ॥
बुल्ला हिरदय बिचारि बोलै,
गुरु ज्ञान आध्यातम[1] देखो भाई ॥ ४ ॥

(९)

आँधरे ने देखो हाथी साथी सब भूलि गयो,
फूलो ब्रह्म जैसे रबि ससि सुहाई है ॥ १ ॥
सोई मूल सोई स्थूल सोई फूल फूलि रहो,
सोई जुग जुग देखो आपु रूप वोई है ॥ २ ॥
आदि अंत मद्ध वोई नीके करि देखो जोई,
सोई त्रिभुवन नाथ बूझै गति कोई है ॥ ३ ॥
गुरु गम होय बोलै नेकु नाहीं चित्त डोलै,
जन बुल्ला निज घर सहज समोई है ॥ ४ ॥

अरिल छन्द

(१)

कोटि भुलै ध्रुव ज्ञान हिये नहिं आइया ।
राम नाम को ध्यान धरो मन लाइया ॥
बिना ध्यान नहिं मुक्ति पिछे पछिताइया ।
बुल्ला हृदय बिचारि राम गुन गाइया ॥

(१) अध्यात्म रामायण ।

(२)

स्याम घटा घन घेरि चहूँ दिसि आइया।
अनहद बाजे घोर जो गगन सुनाइया॥
दामिनि दमकि जो चमकि त्रिबेनी न्हाइया।
बुल्ला हृदय बिचारि तहाँ मन लाइया॥

(३)

सुखमन सीतल सेज हेत ताही से कीजै।
गगन गुफा में पैठि दरस सतगुरु का लीजै॥
आवागवन न होय ब्रह्म कबहूँ नहिं छीजै।
बुल्ला हिरदय प्रेम भरि अम्मर पद लीजै॥

(४)

सामहिं उगवे सूर भोर ससि जागई।
गंग जमुन के संगम अनहद बाजई॥
अजपा जापहिं जाप सोहं डोरि लागई।
बुल्ला ता में पैठि जोति में गाजई॥

(५)

झूठा यह संसार झूठ सब कहत है।
सत्त सब्द की रहनि कोऊ नहिं गहत है॥
बिना सत्त नहिं गत्त कुगत्त परत्त है।
बुल्ला हृदय बिचारि सत्त से रहत है॥

(६)

मुरगी यह संसार चेहुँ चेहुँ करत है।
आतम राम को नाम हृदय नहिं धरत है॥
बिना राम नहिं मुक्ति झूठ सब कहत है।
बुल्ला हृदय बिचारि राम सँग रहत है॥

(७)

ऐसी बनिज हमारि राम को लेन को।
मन पवना दोउ दाम साहु को देन को॥

पाँच पचीस तिन[1] लादि आपु में बैठि के।
बुल्ला दीन्हो हाँकि जोति में पैठि के॥

(८)

क्या भयो ध्यान के किये हाथ मन ना हुआ।
माला तिलक बनाय देत सब को दुआ[2]॥
आसा लागा डोरी कहत भला हुआ।
बुल्ला कहै बिचारि झूठ सेमर घुआ[3]॥

(९)

का भयो सब्द के कहे बहुत करि ज्ञान दे।
मन परतीत नहीं तो कहा जम जान दे[4]॥
का भयो तीरथ किये हिये नहिं आवई।
बुल्ला कहै बिचारि खाली सब जावई॥

(१०)

मन माने की बात बहुरि नहिं बोलना।
अबिनासी से प्रीति कबहुँ नहिं डोलना॥
बनि आई मोरी प्रीति तो आतम राम से।
बुल्ला नैनन देखि बैठु आराम से॥

(११)

सनमुख धारै ध्यान तो कर्म नसावई।
निर्गुन जपै अपार परम पद पावई॥
तन छूटे गति होइ बहुरि नहिं आवई।
बुल्ला हृदय बिचारि बोलि हरि भावई॥

मिश्रित

॥ शब्द १ ॥

जन कहँ समुझि परी यहि बारी, दीयो सब्द बिचारी ॥ टेक॥

---

(१) तीन। (२) आसीस। (३) सेमर की टोंटी में सुवा फल की आस करके चोंच मारता है परन्तु उससे घुआ यानो रुई निकलती है। (४) शब्द भजन के गाने और ज्ञान उपदेश करने से क्या होगा, जब कि मन में प्रतीत नहीं है तो जमराज कैसे जाने देगा।

मन को मारि मुँदो नव द्वारी, जीतो पाँचो नारी ॥ १ ॥
परम तत्त निरंकार ध्यान धरि, बहुरि नहीं अवतारी ॥ २ ॥
जन बुल्ला चरनन बलिहारी, जिन्ह यह गतिहिं सँवारी ॥ ३ ॥
तन मन धन चरनन पर वारी, जम से लियो सँभारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

निरगुन दयाल दानी मनहीं में जानी।
ससि सूर एक आनि रैनि दिवस सानी ॥ १ ॥
बाजे अनहद्द सुनि भई है दिवानी।
उलटि बहन लागो गंग जमुन पानी ॥ २ ॥
करि अस्नान हंसा धरत अधर ध्यानी।
मिटि गयो आवा जानी भई है उज्जल खानी ॥ ३ ॥
जन बुल्ला याही पदहिं समानी।
मोच्छ मुक्ति भक्ति धुजा फहरानी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

बैरागी कौने बैराग घर लिया, जातें सर्ब त्याग तुम किया ॥१॥
कित बैराग कितहि वे मुद्रा, कौने घाट रस पिया ॥२॥
तन बैराग मनहिं मुद्रा, बंक नाल रस पिया ॥३॥
बुल्ला बैराग ब्रह्म बुद्धि, अचल अमर घर किया ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

प्रान नाथ जी, सहजहिं प्याला पायो ॥१॥
प्याला पिया सिखर गढ़ लीया, जोतिहिं जोति समायो ॥२॥
तन कियो कुंड पवन कियो घोटना, छकि छकि अमी छकायो ॥३॥
जन बुल्ला सतगुरु बलिहारी, नित यह अमल चढ़ायो ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

राम नाम जपि उधरो रसना, राम नाम जपि उधरो।
सब्द बिबेकी गगन निरेखी[1], साध सँगति से सुधरो ॥ १ ॥

---

(1) देख कर।

मूँदि के मदन जतन करु संजम, इहै ज्ञान कै मेला।
निरगुन नाम निरंतर पेखी, तहाँ गुरू नहिं चेला ॥ २ ॥
विद्या बेद भेद नहिं जानो, जानो एक अकेला।
आवे न जाय मरे नहिं जीवै, सो सतगुरु सत चेला ॥ ३ ॥
जो कछु कहीं कहत नहिं आवे, जौं रे कहौं तौ पेला[1]।
जन बुल्ला नामहिं को सेवक, अर्ध उर्ध मन खेला ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

साँझ सुबह एकौ नहिं जान, धरि धरि लेइ चलावै बान ॥१॥
धनि वे पुरुष धन्नि वे नारी, आवागवन तें लिहल उबारी ॥२॥
यारी सतगुरु किया निगाह, जन बुल्लहिं ले चला बियाह ॥३॥

॥ शब्द ७ ॥

मैं कस राखौं पाँच नारि, बरज न मानै बड़ी खुवारि[2] ॥१॥
जिन आपन घर किया उजारि[3], कबहुँ न सुमिरहिं देव मुरारि ॥२॥
अबकी उजरे छाइ[4] न जाइ, कासे कहौं यह गति बनाइ ॥३॥
मनुवाँ मकरी रहे समाइ, लै लै जात है संग लगाइ ॥४॥
भोग बिलास कि आस बनाइ, फिरि फिरि नरकहि माहिं समाइ ॥५॥
भला भयल मन चलल कोहाँइ[5], बीचहिं में मिलिगे गुरुराय ॥६॥
हमरे हो तुम सदा सहाय, जन बुल्ला तुम्हरी बलि जाय ॥७॥

॥ शब्द ८ ॥

सोहं हंसा लागलि डोर।
सुरति निरति चढ़ मनुवाँ मोर ॥ १ ॥
झिलिमिलि झिलिमिलि त्रिकुटी ध्यान।
जगमग जगमग गगन तान ॥ २ ॥
गह गह गह अनहद निसान।
प्रान पुरुष तहँ रहत जान ॥ ३ ॥

---

(१) जबरदस्ती। (२) खराब। (३) उजाड़। (४) छावना। (५) रूठना।

लहरि लहरि उठि पछिंव[1] घाट।
फहरि फहरि चल उतर बाट ॥ ४ ॥
सेत बरन तहँ आवै आप।
कह बुल्ला सोइ माइ बाप ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

होत भई बिन मोल कि बाँदी[2]।
अविगति ने मोहिं सहजहिं छाँदी[3] ॥ १ ॥
बिना दाम अब छूटब कैसे।
राखहु अविगति जैसेहिं तैसे ॥ २ ॥
तन मन धन मेरो दाम दमइया।
लेहुँ न अविगति अपनि दुहइया[4] ॥ ३ ॥
जन बुल्ला सरनागति अइया।
बिना राम अब कवन छुड़इया ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

बैरागिनि मोरि हो, होउ जोगिनि के भेस ॥ टेक ॥
उहवाँ तें आइल सँदेसवा हो, सुनहु सखी पँच नारि ॥ १ ॥
कुसल छेम तें चालहु हो, बहुरि न मिलि है मुरारि ॥ २ ॥
बदली रंग बिरँग है हो, भंग रंग केहि काम ॥ ३ ॥
अचल रंग हरि नाम है हो, सुमिरत भयो अराम ॥ ४ ॥
मूल मंत्र सूरति अबिनासी, निरखि देखु हिये माहिं ॥ ५ ॥
जन बुल्ला बलि बलि सतगुरु की, सदा रहे तेहि पाहिं ॥ ६ ॥

॥ शब्द ११ ॥

अहो री पियरवा होत भई जग न्यरवा ॥ १ ॥
मथि मथि कँवल बिगसि कचनरवा, चहत नैन रुचि सरवा ॥२॥
जन बुल्ला बोलै अगम अपरवा, बहुरि न ले अवतरवा ॥३॥

(१) पच्छिम। (२) चेरी। (३) बाँधा। (४) कसम।

॥ शब्द १२ ॥

ऐसे मन रहु हरि के पास । सदा होय तोहि मुक्ति बास ॥१॥
जस धना[1] सेन[1] कबीरदास[1] । नामदेव[1] रैदास[1] दास ॥२॥
सदना[1] पीपा[1] कान्हादास[1] । यारीदास[1] तहँ केसोदास[1] ॥३॥
जिन हरि भक्ति महँ लियो निवास । जम जालिम की काटि फाँस॥४॥
जुग जुग अचल प्रगास बास । जन बुल्ला की पुजलि आस ॥५॥

॥ शब्द १३ ॥

नाथ हाजिरी मेरी लीजे, ता तें दफ्तर दाखिल कीजे ॥ टेक ॥
हौं अतीत[2] गरीब सिपाही, वाहि रोज कछु दीजे ॥ १ ॥
दया धरम अरु ज्ञान ध्यान व्रत, येही अलूफा[3] दीजे ॥ २ ॥
पाँच पचीस तीन मोवासी, वाहि तोरि गढ़ लीजे ॥ ३ ॥
जो जन हृदय बिचार दिखतु है, जन बुल्ला सहि कीजे ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

यह जग जैसे सुपन है, सुनहु बचन परमान ॥ टेक ॥
यह माया जस डाइनी, हरहि लेति है प्रान ॥ १ ॥
पल पल छिन छिन व्यापई, है जम दूत समान ॥ २ ॥
इत की आसा छोड़िये, भजि लीजे निजु नाम ॥ ३ ॥
उबरे कोई संत जन, जिन्ह सुमिर्‍यो है नाम ॥ ४ ॥
जन बुल्ला सरनहिं तेरी, बेरी[4] काटो राम ॥ ५ ॥
भव सागर तें उबारिये, दीजे अपनो धाम ॥ ६ ॥

॥ शब्द १५ ॥

जिवन हमार सुफल भो हो, सइयाँ सुतल समीप ॥ टेक ॥
एक पलक नहिं बिछुरे हो, साइँ मोर जिहीत[5] ।
पुलकि पुलकि रति मानल हो, जानल परतीत ॥ १ ॥
मन पवना सेजासन हो, तिरबेनी तीर ।
हम धन तहवाँ बिराजल हो, लिहले रघुबीर ॥ २ ॥

---

(१) भक्तों के नाम । (२) यतीम, अनाथ । (३) अलिफो, मेखली । (४) बेड़ी ।
(५) जीव-हित ।

सुरति निरति ले जाइब हो, पाइब गुर रीति।
बहुरि न यह जग आइब हो, गाइब निर्गुन गीति ॥ ३ ॥
जन बुल्ला घर छाइब हो, बारब तहँ जोति।
अनहद डंक बजाइब हो, हानि कबहुँ न होति ॥ ४ ॥

॥ शब्द १६ ॥

ऐसे हरि सरनी जो धावे।
राम नाम निजु भजे जु प्रानी, जमदुत निकट न आवे ॥१॥
जैसे भुवँग निकाले मनि को, जुगति से भोग भुगावे।
ऐसीही गति काया मद्धे, बिरला जन कोइ पावे ॥२॥
चलत फिरत पुहमी में टेढ़ो, माँद पईसत सीधो[1]।
जाइ के बैठो गगन भवन में, मनहीं मन से रीझो ॥३॥
सुरति निरति लै भवन से निकसे, भवसागर नहिं सोवे।
जन बुल्ला वहि तत्त प्रगासी, आनँद मंगल गावे ॥४॥

॥ शब्द १७ ॥

हरि नाम निसानी हो जानी ॥ १ ॥
जदि जानी तदि भइ है दिवानी, लोक कहै यह भरम भुलानी ॥२॥
जन बुल्ला की यही निसानो, सुरति निरति ले जोति समानी ॥३॥

॥ शब्द १८ ॥

भाई इक साईं जग न्यारा है ॥ १ ॥
सो मुझ में मैं वाही माहीं, ज्यों जल मद्धे तारा है ॥ २ ॥
वा के रूप रेख काया नहिं, बिना सीस बिस्तारा है ॥ ३ ॥
अगम अपार अमर अबिनासी, सो संतन का प्यारा है ॥ ४ ॥
अनँत कला जाके लहरि उठतु है, परम तत्त निरकारा है ॥ ५ ॥
जन बुल्ला ब्रह्मज्ञान बोलतु है, सतगुरु सब्द अधारा है ॥ ६ ॥

---

(१) सर्प जमीन पर तो टेढ़ा चलता है मगर बाँबी में सीधा घुसता है।

॥ साखी ॥

आठ पहर चौंसठ घरी, जन बुल्ला धर ध्यान।
नहिं जानो कौनी घरी, आइ मिलैं भगवान ॥ १ ॥
आठ पहर चौंसठ घरी, भरो पियाला प्रेम।
बुल्ला कहै बिचारि कै, इहै हमारो नेम ॥ २ ॥
जग आये जग जागिये, पगिये हरि के नाम।
बुल्ला कहै बिचारि कै, छोड़ि देहु तन धाम ॥ ३ ॥
अछै[1] रंग में रंगिया, दीन्ह्यो प्रान अकोल[2]।
उनमुनि मुद्रा भस्म धरि, बोलत अमृत बोल ॥ ४ ॥
बोलत डोलत हँसि खेलत, आपुहिं करत कलोल।
अरज करौं बिन दामहीं, बुल्लहिं लीजै मोल ॥ ५ ॥
बिना नीर बिनु मालिहीं, बिनु सींचे रंग होय।
बिनु नैनन तहँ दरसनो, अस अचरज इक सोय ॥ ६ ॥
ना वह टूटे ना वह फूटे, ना कबहीं कुम्हिलाय।
सर्ब कला गुन आगरो[3], मोपै बरनि न जाय ॥ ७ ॥

---

(१) अक्षय। (२) अँकवार, गोद। (३) श्रेष्ठ।
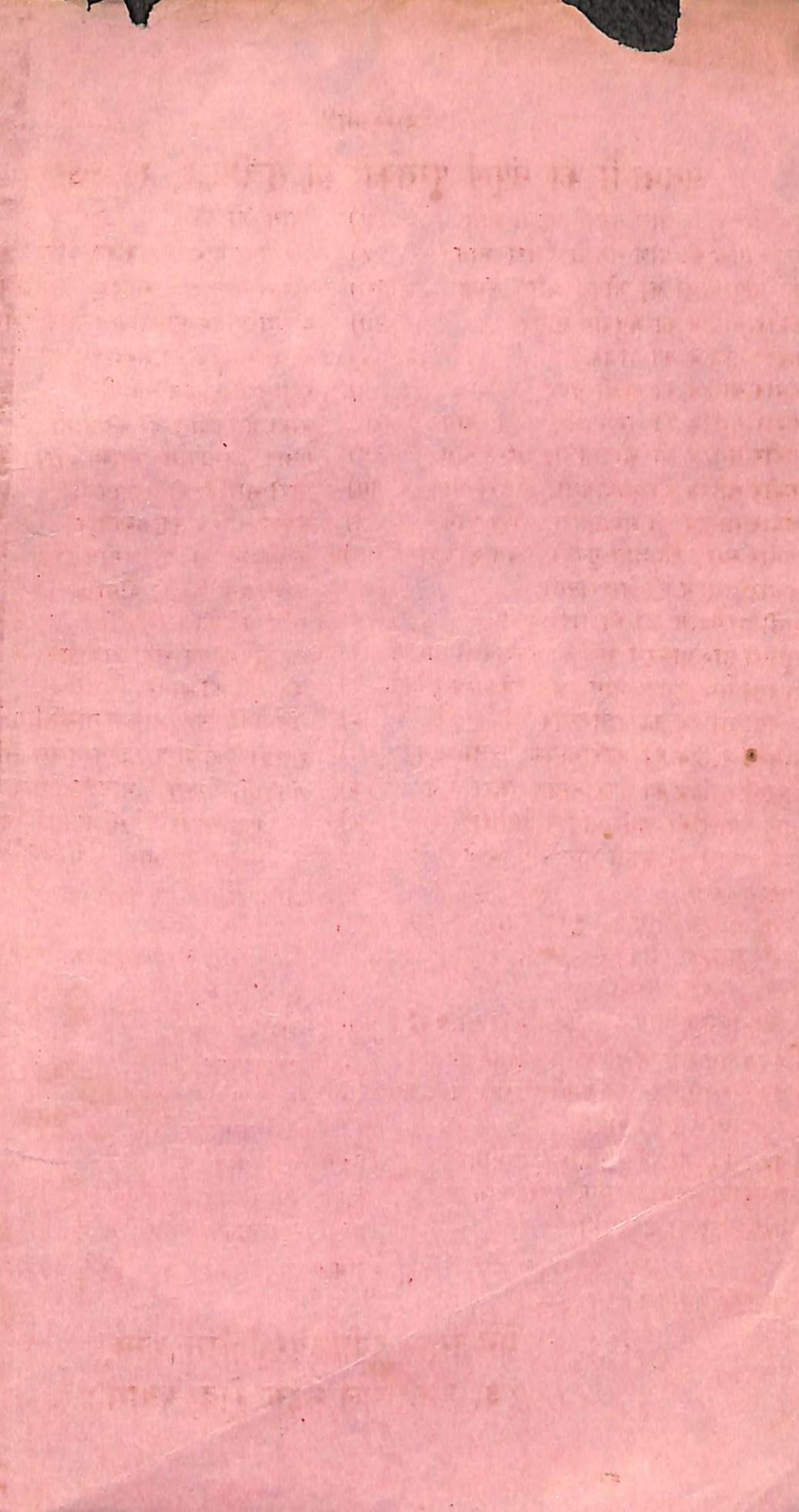
"राधास्वामी"

संतबानी की संपूर्ण पुस्तकों का सूचीपत्र, १९७७

गुरु नानक की प्राण संगली पहला भाग ५)
गुरु नानक की प्राण संगली दूसरा भाग ५)
संत महात्माओं का जीवन चरित्र संग्रह २॥)
कबीर साहिब का अनुराग सागर २॥)
कबीर साहिब का बीजक ४)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह ६)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग २॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग २॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग १॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग १)
कबीर साहब की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते और झूलने १॥)
कबीर साहिब की अखरावती १)
धनी धरमदास जी की शब्दावली २)
तुलसी सा० हाथरस वाले की शब्दावली भाग १ ३)
तुलसी सा० दूसरा भाग पद्मसागर ग्रन्थ सहित ३)
तुलसी साहिब का रत्नसागर ४)
तुलसी साहिब का घटरामायण पहला भाग ६)
तुलसी साहिब का घटरामायण दूसरा भाग ६)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी" ५)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द" ५)
सुन्दर बिलास ३)
पलटू साहिब भाग १—कुण्डलियाँ ३)
पलटू साहिब भाग २—रेखते, झूलने, अरिल, कवित्त, सवैया २॥)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ २॥)
जगजीवन साहिब की बानी पहला भाग ४)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग २॥)
दूलनदास जी की बानी १)
चरनदास जी की बानी, पहला भाग २)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग २॥)
गरीबदास जी की बानी ३)

रैदास जी की बानी
दरिया साहिब बिहार का दरिया
दरिया साहिब के चुने हुए पद और
दरिया साहब मारवाड़ वाले की ब
भीखा साहिब की शब्दावली
गुलाल साहिब की बानी
बाबा मलूकदास जी की बानी
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमा
यारी साहिब की रत्नावली
बुल्ला साहिब का शब्दसार
केशवदास जी की अमींघूंट
धरनीदास जी की बानी
मीराबाई की शब्दावली
सहजोबाई का सहज-प्रकाश
दयाबाई की बानी
संतबानी संग्रह, भाग १ साखी [प्र
त्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र स
संतबानी संग्रह भाग २ शब्द
महात्माओं के संक्षिप्त जीवन
सहित जो भाग १ में नहीं है
लोक परलोक हितकारी

संत महात्माओं के चि

तुलसीदास
कबीर साहब
दादू दयाल
मीराबाई
दरिया साहब
मलूकदास
तुलसी साहब हाथरस वाले
गुरु नानक

दाम में डाक महसूल व पैकिङ्ग शामिल नहीं है, वह अलग से लिया जावे

पुस्तकें मँगवाने का पता :—

मैनेजर, बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
१३, मोतीलाल नेहरू रोड, प्रयाग।